"रेफ़" और "पदेन"

शर्म	अर्थ	तर्क
कर्म	नर्म	सर्प
पार्क	फर्क	दर्द
शर्त	मूर्ख	सर्दी
मिर्च	पूर्व	मिर्ची
गर्मी	अर्पण	वर्ग
कार्य	गर्म	धर्म
चर्चा	मार्ग	तर्क
खर्च	हर्ष	नर्स
सूर्य	पर्व	फर्श
वर्षा	पर्स	आर्या
पर्चा	कुर्ता	मर्ज़ी

रुद्र	शूद्र	ट्रक
प्रेम	प्रेत	आम्र
ट्राम	ताम्र	ड्रामा
ह्रद	क्रम	श्रम
छात्र	चित्र	उम्र
भ्रम	प्रण	ग्राम
ग्रहण	द्रव्य	भ्रमण
राष्ट्र	प्रणाम	प्रमाण

रूचि	रुद्र	रुक
रूखा	रूई	रूट
रूस	रूप	रूढ़
गुरु	डमरू	रुपया
रुझान	रूठना	रूँधना
अमरूद	पुरुष	रूपक

याद रखने योग्य बातें

1. पदेन रूप में या नीचे "र" तब लगता है जब वो किसी आधे वर्ण के बाद होता है।
2. ऐसे में "र" का उच्चारण उस वर्ण के बाद होता है जिसमें "र" नीचे मात्रा के रूप में लगा हो।
3. जब "र" का प्रयोग "त्" और "श्" के बाद होता है तो वो मिलकर संयुक्त अक्षर बनाते हैं। जैसे: त्+र = त्र, त्रिशूल, त्रुटि आदि। वैसे ही: श्+र= श्र, श्रम, श्रोता आदि।
4. लेकिन "र" का प्रयोग "द्" और "ह्" के साथ अलग होता है। "द्" में ये उसके नीचे ही तिरछी रेखा की तरह जुड़ता है जैसे: द्+र=द्र , द्रव्य, द्रुत आदि। और "ह्" में भी तिरछी रेखा की तरह ही जुड़ता है लेकिन अंदर की ओर, जैसे: ह्+र= ह्र, ह्रास।
5. "^" का प्रयोग ज़्यादातर "ट" और "ड" व्यंजन वर्णों के साथ होता है।
6. कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनमें दो पदेन का प्रयोग होता है। जैसे: प्रक्रम (प्+र+अ+क्+र+अ+म्+अ)
7. इसी तरह कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनमें एक साथ पदेन और रेफ़ का प्रयोग शब्द के एक ही वर्ण में होता है। जैसे: आर्द्र